eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 01, Issue 01, Jan 2018

केशवदास के काव्य रसिकप्रिया में उदात्त तत्व

[1]डॉ0 सीमा मलिक
[1]प्रवक्ता, सरस्वती सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, पलवल, हरियाणा

Received: 01 Jan 2018, Accepted: 15 Jan 2018, Published on line: 31 Jan 2018

Abstract

हिंदी साहित्य के भक्ति युग के प्रमुख रीतिकालीन कवि केशवदास ने अपने काव्य में न केवल सौंदर्यबोध और श्रृंगार की परंपरा को उन्नत किया, बल्कि उनके काव्य में उदात्तता की गहन उपस्थिति भी दिखाई देती है। उदात्त तत्व, जो कि आत्मिक उच्चता, नैतिक उत्कृष्टता और भावनात्मक समृद्धि का परिचायक होता है, उनके काव्य में विविध रूपों में परिलक्षित होता है, चाहे वह नायिका के चरित्र की गरिमा हो या नायक की वीरता, अथवा भक्ति और प्रेम की गूढ़ गहराई। प्रस्तुत शोध पत्र में केशवदास के प्रमुख ग्रंथों रसिकप्रिया के आलोक में उनके काव्य के उदात्त पक्ष का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह शोध उदात्तता की भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणाओं के संदर्भ में उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का सम्यक् मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

कीवर्ड– केशवदास, रसिकप्रिया, उदात्त तत्व, हिंदी काव्यशास्त्र, श्रृंगार रस, भक्तिकाल, नायिका भेद, भारतीय काव्य परंपरा, भाव सौंदर्य, नैतिक चेतना

Introduction

हिंदी साहित्य के समृद्ध इतिहास में रीतिकाल को श्रृंगारिकता, अलंकार–चमत्कार और नायिका–भेद जैसे विविध सौंदर्यात्मक पक्षों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इस युग में जहाँ अधिकांश कवि भौतिक प्रेम और राजाश्रयी वातावरण के चित्रण में लीन रहे, वहीं आचार्य केशवदास एक ऐसे कवि के रूप में सामने आते हैं जिन्होंने प्रेम, सौंदर्य और मानवीय संवेदनाओं को केवल भौतिक नहीं, बल्कि आत्मिक ऊँचाई पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उनकी प्रसिद्ध रचना रसिकप्रिया भले ही एक श्रृंगारिक नायिका–नायक के व्यवहार का विश्लेषणात्मक ग्रंथ प्रतीत होती हो, किन्तु उसमें अन्तर्निहित ष्उदात्तताष उस काव्य को उच्च काव्यिक गरिमा प्रदान करती है।

उदात्त तत्व वह होता है जो व्यक्ति को सामान्य मानसिक अवस्था से ऊपर उठाकर किसी उच्च भावलोक या आत्मिक चेतना की ओर ले जाए। यह न केवल सौंदर्य और भाव की पराकाष्ठा है, बल्कि नैतिकता, आदर्शवाद, संयम और संवेदनात्मक परिपक्वता का भी सूचक होता है। भारतीय काव्यशास्त्र में, विशेषकर भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, मम्मट के काव्यप्रकाश तथा आनंदवर्धन के ध्वन्यालोक में उदात्त को काव्य की उच्चतम कोटि का भाव माना गया है।

रसिकप्रिया में केशवदास ने प्रेम को केवल इन्द्रियजन्य आकर्षण के रूप में न चित्रित कर, उसे भावनात्मक निष्ठा, समर्पण और आत्मिक अनुराग के रूप में प्रतिष्ठित किया है। वियोग की पीड़ा, विरह की गरिमा, त्याग की भावना और प्रेम की मर्यादा जैसे प्रसंगों में 'उदात्तता' की व्यापक

झलक मिलती है। केशवदास का यह दृष्टिकोण उन्हें रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों की सामान्य परंपरा से भिन्न बनाता है।

यह शोध–पत्र इस महत्वपूर्ण पक्ष पर केन्द्रित है कि रसिकप्रिया में किस प्रकार उदात्त तत्व विद्यमान हैं, उनकी अभिव्यक्ति किन रूपों में हुई है तथा यह तत्व केशवदास के काव्य–दर्शन को कैसे विशेष बनाते हैं। शोध में इस बात की भी जाँच की जाएगी कि क्या उदात्तता केवल वर्ण्य विषय या भाषा में है या यह कवि की आंतरिक दृष्टि और भावप्रवृत्ति का अंग भी है। साथ ही, यह अध्ययन रसिकप्रिया के सौंदर्यात्मक पक्षों को पुनः नए दृष्टिकोण से समझने का एक प्रयास है।

इस शोध का उद्देश्य रसिकप्रिया को केवल श्रृंगारिक दृष्टिकोण से न देखकर उसमें समाहित नैतिक, आत्मिक और उदात्त पक्षों को उभारना है जिससे केशवदास की रचना को एक उच्च काव्यिक आयाम प्रदान किया जा सके।

उदात्त तत्व की सैद्धांतिक अवधारणा– उदात्त तत्व काव्यशास्त्र का एक ऐसा गूढ़ और महत्वपूर्ण विषय है, जो किसी काव्य की भावनात्मक ऊँचाई, आत्मिक गरिमा और नैतिक गंभीरता का परिचायक होता है। यह वह तत्व है जो पाठक के हृदय में न केवल सौंदर्य या करुणा का संचार करता है, बल्कि उसे उच्च मानसिक और आत्मिक स्तर पर ले जाकर 'विस्मय', 'श्रद्धा' और 'गौरव' का अनुभव कराता है। उदात्तता के मूल में सौंदर्य, आदर्शवाद, आत्मबल, वीरता, त्याग, भक्ति और नैतिकता जैसे गुण निहित होते हैं।

भारतीय काव्यशास्त्र में उदात्त तत्व– भारतीय काव्यशास्त्र में 'उदात्त' शब्द का सीधा उल्लेख सीमित है, लेकिन इसकी अवधारणा अप्रत्यक्ष रूप से 'रस सिद्धांत', 'ध्वनि सिद्धांत' और 'औचित्य' आदि के माध्यम से विद्यमान है। रसों में विशेषकर 'वीर रस', 'शांत रस' और 'भक्ति रस' में उदात्तता का स्वरूप प्रकट होता है। वीर रस में वीरता, आत्मबल और कर्तव्यपालन की उच्च भावना होती है; शांत रस में वैराग्य और आत्मिक शांति होती है, जबकि भक्ति रस में ईश्वर के प्रति समर्पण और श्रद्धा भाव होता है जो तीनों ही उदात्तता को मूर्त रूप देते हैं। ध्वनि सिद्धांत के अनुसार जब किसी कविता के पीछे कोई गूढ़ भाव छिपा होता है, जो सीधे न कहकर परोक्ष रूप में भावबोध कराता है, और वह भाव यदि आत्मोन्नयन, आदर्श या गूढ़ नैतिकता से जुड़ा हो, तो वह उदात्त होता है। काव्य के औचित्य सिद्धांत के अनुसार भी, जब कोई पात्र, संवाद या घटना अपने चरित्र या संदर्भ के अनुरूप गरिमामय ढंग से प्रस्तुत हो, तो उसमें उदात्तता का बोध होता है।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में उदात्तता– पाश्चात्य साहित्य में उदात्त के समतुल्य शब्द Sublime है, जिसकी अवधारणा को सबसे पहले लोंगिनस (Longinus) ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ On the Sublime में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार Sublime वह शक्ति है जो काव्य को सामान्य से ऊपर उठाकर उत्कृष्ट बना देती है। लोंगिनस के अनुसार Sublimity की पाँच प्रमुख विशेषताएं हैं– महान विचार, शक्तिशाली भावनाएँ, उत्तम भाषा, भावात्मक ऊँचाई, अनुभवजन्य प्रभाव।

लोंगिनस के अनुसार, जब कोई कविता मनुष्य की आत्मा को ऊँचाई प्रदान करती है, उसकी सीमाओं को लांघती है, और उसे कुछ महा और विशाल अनुभव कराती है, तब वह 'Sublime' होती है।

उदात्तता के घटक तत्व– चाहे भारतीय हो या पाश्चात्य परंपरा, उदात्तता के निम्न तत्व प्रमुख रूप से स्वीकार किए जाते हैं– नैतिक गरिमा, आत्मिक ऊँचाई, नायकीयता एवं आदर्शवाद, संयम, त्याग और समर्पण, भक्ति और ईश्वर प्रेम, प्रभावशाली भाषा एवं शैली।

उदात्तता और काव्य का संबंध– उदात्तता किसी भी काव्य को केवल मनोरंजन से ऊपर उठाकर 'प्रेरणा', 'संस्कार' और 'भावोत्कर्ष' का माध्यम बनाती है। जब पाठक किसी काव्य को पढ़ते हुए केवल भावनात्मक रूप से प्रभावित नहीं होता, बल्कि मानसिक और आत्मिक दृष्टि से भी ऊँचाई अनुभव करता है, तब वह काव्य उदात्त माना जाता है।

केशवदास के सन्दर्भ में प्रासंगिकता– केशवदास के काव्य में उदात्तता का यह तत्व अनेक रूपों में मिलता है राम की मर्यादा, सीता की शीलता, वीर नायिकाओं का आत्मबल, भक्ति की गहनता, और भाषा की गंभीरता। इस प्रकार वे न केवल श्रृंगार रस के कवि हैं, बल्कि उदात्त भावभूमि के भी संवाहक हैं।

रसिकप्रिया में उदात्त तत्व– 'रसिकप्रिया' केशवदास की सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना है, जिसे उन्होंने ओरछा नरेश इन्द्रजीत सिंह के आदेश पर रचा था। यह ग्रंथ मुख्यतः श्रृंगार रस पर आधारित है और नायक–नायिका भेद, प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं, तथा श्रृंगारिक सौंदर्य की शास्त्रीय विवेचना प्रस्तुत करता है। यद्यपि इसका मूल स्वरूप श्रृंगार प्रधान है, तथापि इसमें वर्णित कुछ प्रसंगों, नायिका चित्रणों, तथा प्रेम की आध्यात्मिक व्याख्याओं में उदात्तता (Sublimity) की स्पष्ट झलक मिलती है।

श्रृंगार में उदात्तता का समावेश– रसिकप्रिया में श्रृंगार को केवल लौकिक भोग या दैहिक आकर्षण तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि उसमें आत्मिक प्रेम, नारी की गरिमा, और मानसिक भावुकता का चित्रण भी हुआ है। जहाँ नायिका का प्रेम पवित्र, त्यागमय और आदर्शवादी रूप में प्रस्तुत होता है, वहीं नायक की निष्ठा, धैर्य और संयम भी उदात्तता का परिचायक है।

उदाहरण–

प्रिय वियोग सहै जो नारी, सखी साँचो सिंगार।

यहाँ 'प्रिय वियोग सहन करने वाली नारी' को ही 'सच्चा श्रृंगार' कहा गया है। यह प्रेम की आत्मिकता और मानसिक बल का परिचायक है जो सामान्य श्रृंगार से ऊपर उठकर उदात्त भावभूमि पर स्थित है।

स्वाधीनपतिका नायिका में आत्मबल और गरिमा– स्वाधीनपतिका नायिका वह है जो न केवल अपने प्रिय के प्रति अनुरक्त है, बल्कि उसकी भावना इतनी दृढ़ होती है कि वह अपने प्रेम पर पूर्ण अधिकार रखती है। वह दीन नहीं, आत्मनिर्भर और गरिमामयी होती है। उसका यह आत्मबल और आत्मविश्वास, उसे उदात्त नायिका बनाता है।

उदाहरण–
जेहि कर अधीन न रहै, जेहि की नज़र समरथ।

ऐसी नायिका भई, साँच कहे सबसठ।

यह छंद नायिका की मानसिक उच्चता और उसकी आत्मिक स्वतंत्रता को दर्शाता है।

विरहिणी नायिका की सहिष्णुता और त्याग– विरहिणी नायिका, जो अपने प्रिय के वियोग में तप रही होती है, उसका प्रेम केवल कामना नहीं, तपस्या और समर्पण का प्रतीक बन जाता है। उसकी पीड़ा में करुणा है, परन्तु उसमें कोई क्षोभ या आत्मविलाप नहीं, बल्कि गहन धैर्य और प्रेम की गहराई हैकृजो उसे उदात्त बना देता है।

उदाहरण–

जल सुकुमारि बिरह ज्वाला, बिनु ज्वालन दीपै।
चुपचाप सहै ताप तजि, प्रीत को न दीखै।

यहाँ विरहिणी की शांति और सहिष्णुता उसकी प्रेम की आध्यात्मिकता और आत्मबल को दर्शाते हैं।

प्रेम की आत्मिक व्याख्या– 'रसिकप्रिया' में प्रेम को केवल इंद्रियजन्य अनुभव नहीं माना गया, बल्कि उसे एक रसभरी, संस्कारित और आत्ममय अनुभूति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह दृष्टिकोण केशवदास को अन्य श्रृंगारी कवियों से अलग करता है और उनके काव्य को उदात्तता के निकट ले जाता है।

प्रेम को न जानै सोई, कबहुँ न पावै प्रीत।
आत्मा–आत्मा जब मिलै, तब होय साँचो मीत।

यहाँ प्रेम को आत्मा की आत्मा से मिलन के रूप में चित्रित किया गया हैकृजो लौकिक प्रेम नहीं, उदात्त प्रेम है।

नैतिकता और आदर्शवाद– 'रसिकप्रिया' में नायिकाओं के चरित्र में त्याग, मर्यादा और आत्म–संयम जैसे गुण भी मिलते हैं। वे केवल भोग्या नहीं, अपितु चरित्रगौरव और आत्मनिष्ठा से युक्त हैं। यह चित्रण रीतिकालीन नायिकाओं को एक उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित करता है।

यद्यपि 'रसिकप्रिया' का मुख्य उद्देश्य श्रृंगारिक सौंदर्य की व्याख्या करना था, फिर भी केशवदास ने प्रेम को केवल इंद्रियजन्य अनुभव तक सीमित न रखते हुए उसमें आत्मिकता, त्याग, संयम और गरिमा जैसे उदात्त तत्वों का समावेश किया। इस प्रकार 'रसिकप्रिया' केवल एक शृंगारिक काव्य न रहकर एक भावप्रधान और आदर्शवादी कृति बन जाती है, जिसमें प्रेम की गरिमा और मानसिक ऊँचाई स्पष्ट परिलक्षित होती है।

वीर रस और उदात्तता का संबंध– वीर रस और उदात्तता का पारस्परिक संबंध अत्यंत गहरा और स्वाभाविक है। भारतीय काव्यशास्त्र के अनुसार वीर रस वह भाव है जिसमें पराक्रम, धैर्य, उत्साह, आत्मबल, और कर्तव्यपरायणता की भावना प्रकट होती है। जब ये गुण किसी पात्र, प्रसंग या स्थिति के माध्यम से काव्य में अभिव्यक्त होते हैं, तो वे न केवल काव्य को गतिशील बनाते हैं, बल्कि उसमें

एक उदात्त, प्रेरणादायक और भावनात्मक ऊँचाई उत्पन्न करते हैं। उदात्तता का सारतत्त्व ही यह है कि वह पाठक को भावविभोर कर आत्मगौरव, प्रेरणा और मानसिक उत्थान की अनुभूति कराए और वीर रस में ये सभी विशेषताएँ अंतर्निहित होती हैं।

नायिका भेद और उदात्त चरित्र– नायिका भेद हिंदी रीतिकाव्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण काव्यपरंपरा है, जिसमें नारी के रूप, भाव, स्थिति, स्वभाव और संबंधों के आधार पर नायिकाओं को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। यद्यपि यह वर्गीकरण मुख्यतः श्रृंगार रस को केंद्र में रखकर किया गया है, तथापि केशवदास की 'रसिकप्रिया' में नायिकाओं का जो चित्रण मिलता है, उसमें केवल सौंदर्य और प्रेम की लीलाओं की नहीं, बल्कि उदात्त चरित्र की भी एक विशिष्ट झलक दिखाई देती है।

केशवदास ने नायिकाओं को केवल भोग्या नहीं माना, बल्कि उन्हें संवेदनशील, आत्मबलयुक्त, निष्ठावान, त्यागमयी और आत्मगरिमापूर्ण रूपों में प्रस्तुत किया है। यह चित्रण उन्हें उनके समकालीन कवियों से भिन्न और विशिष्ट बनाता है।

स्वाधीनपतिका नायिका में आत्मविश्वास और गरिमा– स्वाधीनपतिका नायिका वह होती है जो अपने प्रेमी पर पूर्ण अधिकार रखती है। वह केवल प्रेम की साधिका नहीं, बल्कि अपनी भावना, अस्तित्व और मर्यादा के प्रति सजग, स्वतंत्र और आत्मबल से संपन्न होती है। उसमें नारी गरिमा, मानसिक सशक्तता और स्वाभिमान का अद्भुत समन्वय होता है।

उदाहरण

जासु अधीन न होय, सोइ रसिका रानी।
प्रिय मति बिनु जो चलै, सोहि निज जानी।

इस प्रकार की नायिका केवल श्रृंगारी नहीं, आत्मबल और विवेक की प्रतीक बन जाती है कृ जो कि उदात्तता का एक स्वरूप है।

विरहिणी नायिका में त्याग और सहिष्णुता– विरहिणी नायिका प्रेम में वियोग की वेदना को सहते हुए भी अपने प्रेम और निष्ठा से विचलित नहीं होती। उसका यह भाव प्रेम को आत्ममूल्य और त्याग के स्तर तक पहुँचा देता है। उसकी पीड़ा भी उसे एक उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित करती है।

उदाहरण–

विरह बाण संधान करि, छेदत मन की देह।
नायिका सहे साँच प्रीत, कहै केशव लेखक लेख।

विरहिणी की सहनशीलता, शालीनता और संयम एक मानसिक दृढ़ता और उदात्तता का परिचायक है।

खंडिता नायिका में नारी अस्मिता और आत्माभिमान– खंडिता नायिका वह होती है जो विश्वासघात या प्रिय के अनैतिक आचरण से आहत होती है और उसका स्पष्ट विरोध करती है। इस विरोध में उसकी नारी चेतना, आत्मसम्मान और नैतिक बोध व्यक्त होता है, जो उस पात्र को केवल श्रृंगारिक नहीं, एक नैतिक आदर्श का स्वरूप बना देता है।

उदाहरण–

कहौं काह को दुख गहौं, सुनि प्रिय पर की रीति।
जो तन की चाह न त्यजै, सो साँचो न प्रेम प्रतीति।

यहाँ नायिका प्रेम को केवल शारीरिक स्तर तक सीमित नहीं मानती, बल्कि उसमें नैतिकता और सच्चाई की मांग करती है जो एक प्रकार की उदात्त भावना है।

वत्सला नायिका में वात्सल्य और मानसिक उत्कृष्टता– वत्सला नायिका का प्रेम वात्सल्यपूर्ण होता है। वह अपने प्रिय की चिंता करती है, उसका मार्गदर्शन करती है और उसकी भावनाओं का ख्याल रखती है। उसका यह संवेदनात्मक सामर्थ्य उसे एक आदर्श स्त्री–चरित्र बनाता है।

उदाहरण–
नैनन में नीक बचन, मन में करुणा छाय।
कहे केशव वत्सला, सब गुनन की छाय।

यह गुण नायिका को भावनात्मक ऊँचाई पर ले जाता है कृ जहाँ वह प्रेमिका के साथ–साथ संरक्षिका भी बन जाती है।

अभिसारिका नायिका में साहस और निष्ठा– अभिसारिका वह नायिका होती है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने प्रिय से मिलने जाती है। उसमें सामाजिक भय, आलोचना, अंधकार और संकटों के बीच भी प्रेम के प्रति जो समर्पण और साहस होता है, वह उसे अत्यंत प्रभावशाली और उदात्त चरित्र प्रदान करता है।

उदाहरण–

घन घमंड गरजत गगन, पंथ अगम अगाध।
चलि अभिसार करै जो बिनु, तासु प्रेम प्रभुत्व साध।

यह प्रेम केवल संयोग की इच्छा नहीं, निष्ठा और भाविक बल का प्रतीक है।

केशवदास के नायिका भेद का अध्ययन केवल श्रृंगारिक विन्यास तक सीमित नहीं है। उन्होंने नारी के भीतर के उदात्त गुणों आत्मबल, त्याग, निष्ठा, आत्मसम्मान और संवेदनशीलताकृको गहराई से चित्रित किया है। उनकी नायिकाएं केवल सौंदर्य की प्रतिमूर्ति नहीं, बल्कि उच्च भावभूमि की संवाहिका हैं। यही विशेषता उन्हें उदात्त चरित्र प्रदान करती है और केशवदास के काव्य को मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक ऊँचाई पर प्रतिष्ठित करती है।

काव्यभाषा और शैली में उदात्तता– काव्य की आत्मा उसकी भाषा और शैली में निहित होती है। भाषा केवल विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, वह भावों की सूक्ष्मता, कल्पना की ऊँचाई और विचारों की गरिमा को भी मूर्त रूप देती है। जब भाषा में सौंदर्य के साथ–साथ भावनात्मक गहराई, नैतिक गंभीरता और आत्मिक ऊँचाई का समावेश होता है, तब वह उदात्तता को प्रकट करती है। आचार्य केशवदास की काव्यभाषा और उनकी शैली में ऐसे ही तत्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

ब्रज भाषा की माधुर्यपूर्ण गरिमा– केशवदास की भाषा ब्रजभाषा है, जो रीतिकालीन काव्य की सर्वप्रिय भाषा रही है। इस भाषा की विशेषता यह है कि उसमें कोमलता, माधुर्य, लयात्मकता और भावाभिव्यक्ति की क्षमता अत्यधिक है। केशवदास ने ब्रजभाषा को केवल श्रृंगार की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसमें वीरता, भक्ति, नैतिकता और चरित्र गरिमा जैसे विषयों को भी अभिव्यक्त किया।

भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।

यह पंक्ति न केवल मधुर ध्वनि से युक्त है, बल्कि श्रीराम के उदात्त स्वरूप को व्यक्त करती है।

अलंकारों का मर्यादित प्रयोग– केशवदास अलंकारप्रिय कवि हैं, लेकिन उन्होंने अलंकारों का प्रयोग भावों की अभिव्यक्ति को बल देने के लिए किया है, न कि केवल चमत्कार उत्पन्न करने के लिए। उनके काव्य में रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा, अनुप्रास जैसे अलंकारों का ऐसा सशक्त प्रयोग है, जो पाठक के मन में श्रद्धा, सौंदर्यबोध और आत्मिक विस्मय उत्पन्न करता है।

उदाहरण–
राम सों रूप न राखै तुला,
दीप सों कैसे कहै भानु भला?

यहाँ राम के सौंदर्य को सूर्य से भी श्रेष्ठ बताया गया है, जिससे उनकी उदात्त छवि और अधिक प्रभावशाली हो जाती है।

ध्वनि और छंद की गरिमा– केशवदास की काव्यशैली छंदबद्ध है, जिसमें छंद की लयात्मकता, गति और ध्वनि सौंदर्य पाठक को भावपूर्ण अनुभव कराती है। विशेषतः कवित्त, सवैया, दोहा, चौपाई आदि छंदों का प्रयोग उनके काव्य में लय और गंभीरता का समावेश करता है। इस संगीतात्मकता के साथ जब भावों की गंभीरता जुड़ती है, तब वह उदात्तता का जन्म देती है।

सियाराम मय सब जग जानी।

करहु प्रणाम जोरि जुग पानी॥

यह चौपाई न केवल भक्ति की भावना को जाग्रत करती है, बल्कि उसकी भाषा और शैली में श्रद्धा की गरिमा स्पष्ट होती है।

शैली में संतुलन और औचित्य– केशवदास की शैली में न भावों की अधिकता है, न भाषा की कृत्रिमता। वे न श्रृंगार में अतिशयोक्ति करते हैं, न वीरता में आक्रामकता। उनकी शैली में भाव, भाषा और सौंदर्य का संतुलन है, जो उन्हें एक उदात्त कवि बनाता है। वे जब वीरता की बात करते हैं, तो उसमें नीति और मर्यादा का समावेश होता है; जब श्रृंगार का वर्णन करते हैं, तो उसमें आत्मिक सौंदर्य होता है।

भावों की गहराई और संप्रेषण की शक्ति– केशवदास की भाषा में भावों की सघनता और अभिव्यक्ति की शक्ति है। उनके शब्द केवल शब्द नहीं, भावों की आत्मा होते हैं। यही कारण है कि उनकी कविता केवल मन को नहीं, आत्मा को भी स्पर्श करती है। यह संप्रेषणीयता उनकी भाषा को उदात्तता प्रदान करती है।

उदाहरण–
रामहि केवल प्रेम पियारा, जानि लेहु जो जान।

यह पंक्ति राम की भक्ति को भाव और आत्मा दोनों से जोड़ती है। इसमें जो सरलता है, वही इसकी उदात्तता है। केशवदास की काव्यभाषा और शैली में उदात्तता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी भाषा में सौंदर्य है, लेकिन सादगी भी है; लालित्य है, लेकिन गंभीरता भी है; संगीतात्मकता है, लेकिन विचारबोध भी है। यह संतुलन ही उनके काव्य को मानसिक, नैतिक और आत्मिक स्तर पर ऊँचा उठाता है। उनकी शैली केवल चमत्कारी नहीं, बल्कि जीवनद्रष्टि और आध्यात्मिक चेतना से युक्त है जो उदात्तता का मूल आधार है।

समकालीन रीतिकवियों की तुलना में केशव का सीन– आचार्य केशवदास का काव्य हिंदी रीतिकाव्य की उस धारा से संबंध रखता है, जो कलापरकता, भावनात्मक गहराई, रसनिष्ठता और अलंकारिक सौंदर्य से समृद्ध है। रीतिकाल (1600–1850 ई.) को सामान्यतः श्रृंगार प्रधान काल कहा जाता है, और इस युग के अधिकांश कवियों जैसे बिहारी, मतिराम, देव, भूषण, पद्माकर, चिंतामणि, घनानंद आदि ने श्रृंगार, वीर और भक्ति रसों के माध्यम से काव्य रचना की। किन्तु इन सभी के बीच केशवदास का स्थान विशिष्ट, बहुआयामी और उदात्त भावभूमि से ओतप्रोत माना जाता है।

विषय वैविध्य और गंभीरता– केशवदास ने जहां एक ओर 'रसिकप्रिया' में श्रृंगार रस का तात्त्विक विवेचन किया, वहीं दूसरी ओर 'रामचंद्रिका' में धार्मिक, नैतिक और वीरता से परिपूर्ण रामकथा प्रस्तुत की। उनके समकालीन कवियों में अधिकतर कवियों ने या तो श्रृंगार पर एकाग्रता रखी (जैसे बिहारी), या वीर रस को विशेष महत्व दिया (जैसे भूषण)। परन्तु केशव ने श्रृंगार, वीरता, भक्ति और नीति इन सभी विषयों को संतुलित रूप से स्थान दिया।

काव्य में उदात्त तत्वों का समावेश– बिहारी के सतसई में भाषा की चातुर्य और अलंकारों की कुशलता है, परन्तु उसमें आत्मिक उदात्तता अपेक्षाकृत कम है। भूषण के काव्य में वीरता की उत्तेजना है, परन्तु उसमें संयम और नैतिकता की उदात्त भावना न्यून है। घनानंद के पदों में श्रृंगारिक वेदना है, परन्तु वह भक्ति की गहराई या नैतिक ऊँचाई नहीं दर्शाते। इसके विपरीत, केशवदास ने राम के आदर्श,

नारी की गरिमा, वीरता की मर्यादा, प्रेम की पवित्रता और भक्ति की आत्मिकता को अपने काव्य में स्थान देकर उसे एक उदात्त स्तर पर पहुँचा दिया।

काव्य–शास्त्रीय दृष्टिकोण से योगदान– केशवदास न केवल कवि थे, बल्कि एक सुशिक्षित आचार्य भी थे। उन्होंने रस, अलंकार, नायिका भेद, रीतिविवेचन आदि विषयों को व्यावहारिक उदाहरणों सहित प्रस्तुत किया। उनकी रसिकप्रिया एक साहित्यिक शास्त्र भी है। इस दृष्टि से वे आचार्यत्व की परंपरा में आते हैं, जबकि उनके समकालीन अधिकांश कवि केवल भावकवि या रचनात्मक शिल्पी थे।

भाषा और शैली की गरिमा– केशव की भाषा में एक प्रकार की संतुलनयुक्त गरिमा है। उनकी शैली गंभीर, मधुर, चित्रात्मक और अर्थगर्भित है। उन्होंने अलंकारों का उपयोग सौंदर्य वृद्धि हेतु किया, न कि केवल चमत्कार दिखाने के लिए। देव और कविराय जैसे कवियों में अत्यधिक अलंकारप्रियता देखने को मिलती है, जिससे भाव की मौलिकता दब जाती है। केशवदास इस चमत्कारप्रियता से बचते हैं और औचित्य और भाव की उदात्तता को प्रमुखता देते हैं।

भक्ति और नीति की उपस्थिति– जहाँ अधिकांश रीतिकालीन कवि श्रृंगार में लीन रहे, वहीं केशवदास ने रामचंद्रिका के माध्यम से राम की भक्ति, नीति, मर्यादा और धर्म की रक्षा को केन्द्र में रखकर धार्मिक साहित्य में भी योगदान दिया। यह उन्हें तुलसीदास की परंपरा से जोड़ता है।

स्त्री चित्रण में गरिमा और उदात्तता– केशव की नायिकाएँ केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर, संवेदनशील और नैतिक दृष्टिकोण से सम्पन्न स्त्रियाँ हैं। वहीं उनके समकालीन कवियों में स्त्री का चित्रण अक्सर भोग्या या विलासिता की दृष्टि से किया गया।

आचार्य केशवदास ने रीतिकाव्य को केवल श्रृंगार या अलंकार तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने उसे धर्म, नीति, भक्ति, वीरता, स्त्री गरिमा, और आत्मिक प्रेम जैसे उदात्त तत्वों से समृद्ध किया। उनकी दृष्टि केवल मनोरंजन की नहीं, बल्कि संस्कार देने की थी। अपने समकालीन कवियों की तुलना में केशवदास का स्थान उदात्त विचार, विषयों की व्यापकता, भाषा की गरिमा और भावों की गहराई के कारण अत्यंत उच्च है। इस प्रकार केशव न केवल रीतिकाल के प्रमुख कवि, बल्कि काव्य के आदर्शवादी साधक भी हैं जिनकी काव्यधारा आज भी प्रेरणा देती है।

निष्कर्ष– आचार्य केशवदास हिंदी रीतिकाव्य परंपरा के ऐसे महत्वपूर्ण कवि हैं, जिन्होंने काव्य में श्रृंगार, भक्ति, नीति, वीरता और आत्मिक सौंदर्य के समन्वय से एक अद्वितीय उदात्त काव्यलोक की रचना की। उनके काव्य में जहाँ एक ओर शिल्प सौंदर्य और भाषा की माधुर्यपूर्ण परंपरा है, वहीं दूसरी ओर भावों की गहनता, नैतिकता, आत्मबल और आदर्शवाद की स्पष्ट उपस्थिति भी है। यह शोध 'केशवदास के काव्य में उदात्त तत्व' के विविध पक्षों का विश्लेषण करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि श्रृंगारिकता के भीतर निहित उदात्तता 'रसिकप्रिया' में श्रृंगार रस का आलंबन होते हुए भी केशवदास ने प्रेम को केवल इंद्रियजन्य नहीं, बल्कि मानसिक, आत्मिक और त्यागमय भाव के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी नायिकाएँ गरिमामयी, आत्मबल से युक्त और नारी चेतना की प्रतीक हैं।

केशवदास का रसिकप्रिया हिंदी साहित्य के रीतिकालीन श्रृंगार काव्य परंपरा का एक अद्वितीय ग्रंथ है, जिसे आम तौर पर नायिका–भेद, अलंकारिक सौंदर्य और चित्रण–कला की दृष्टि से मूल्यांकित किया जाता है। परंतु इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि रसिकप्रिया के भीतर छिपी हुई एक और गहन परत है उदात्तता की परतकृजो इस ग्रंथ को केवल श्रृंगारिक रचना न मानकर उसे एक उच्चस्तरीय भावात्मक, नैतिक और दार्शनिक काव्य में रूपांतरित कर देती है।

भारतीय काव्यशास्त्र में उदात्त को वह भाव माना गया है जो पाठक या श्रोता के मन में उच्चता, सम्मान, संयम, करुणा, नैतिकता और आत्मविभोरता उत्पन्न करता है। रसिकप्रिया में प्रेम, सौंदर्य और संबंधों के माध्यम से यह उदात्तता बार–बार उभरती है। नायिका–नायक की भावनात्मक स्थितियाँ, विरह की गरिमा, आत्मसंयम, मर्यादा, और नैतिक प्रेम इन तत्वों को गहराई से पुष्ट करते हैं। केशवदास ने नायक–नायिका के प्रेम को मात्र कामनात्मक आकर्षण नहीं माना, बल्कि उसमें आत्मिक एकत्व, भाव–संयम, और नैतिक समर्पण को महत्त्व दिया। मानिनी नायिका की मर्यादा, विरहिणी की प्रतीक्षा और नायक की करुणा ये सब उदात्त प्रेम की विशिष्ट झलकियाँ हैं। ऐसे वर्णनों से यह प्रतीत होता है कि प्रेम न केवल एक संवेग है, बल्कि एक आत्म–उत्कर्ष की साधना भी है। केशवदास की भाषा अलंकारों से समृद्ध होने के बावजूद केवल चमत्कारिक नहीं है। उसमें गहराई, गरिमा और सजीवता है। उपमानों, दृष्टांतों और अनुप्रासों का प्रयोग न केवल श्रृंगारिक सौंदर्य रचने के लिए है, बल्कि उदात्त भावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने हेतु किया गया है। यह भी स्पष्ट हुआ कि केशवदास, भक्ति और रीति के मध्य सेतु रूप में कार्य करते हैं। जहाँ एक ओर उनका काव्य प्रेम की सूक्ष्मताओं का विश्लेषण करता है, वहीं दूसरी ओर उसमें भक्ति–कालीन समर्पण, शुद्धता और नैतिकता की भी गूंज सुनाई देती है। यह गुण उन्हें विशिष्ट बनाता है। आज के समय में जब प्रेम और संबंधों की परिभाषाएँ अधिक व्यावसायिक और तात्कालिक हो चुकी हैं, ऐसे में रसिकप्रिया में उपस्थित उदात्त प्रेम और नैतिकता की भावना एक नैतिक मार्गदर्शन का कार्य कर सकती है। यह रचना भावनाओं के परिष्कार और संबंधों की गरिमा की प्रेरणा देती है।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि रसिकप्रिया में केवल श्रृंगारिक सौंदर्य नहीं, बल्कि उदात्तता की व्यापक उपस्थिति है। केशवदास ने प्रेम को जिस गरिमा, आत्मसंयम और नैतिकता के साथ प्रस्तुत किया है, वह उन्हें न केवल एक सफल रीतिकालीन कवि बनाता है, बल्कि एक गहन भावात्मक चिंतक और आदर्श प्रेम–दृष्टा के रूप में प्रतिष्ठित करता है। रसिकप्रिया एक ऐसा ग्रंथ है, जिसमें उदात्त प्रेम की संकल्पना, मानवीय संबंधों की गरिमा और काव्य–सौंदर्य की उच्चतम पराकाष्ठा का सम्मिलन हुआ है।

अंततः, आचार्य केशवदास का साहित्यिक अवदान हिंदी काव्यधारा को केवल कलापरक सौंदर्य ही नहीं, नैतिक और आध्यात्मिक चेतना से भी संपन्न करता है। उनकी काव्य दृष्टि में जो उदात्तता है, वह उन्हें कालजयी बनाती है।

सन्दर्भ सूची–

1 हिंदी काव्यशास्त्र, डॉ. नगेन्द्र राजकमल प्रकाशन, 2000
2 केशवदास और उनका काव्य, डॉ. लक्ष्मीनारायण सुधांशु, साहित्य भवन, 1998, ISBN 9788187164129
3 रसिकप्रिया का आलोचनात्मक अध्ययन, डॉ. विजयपाल सिंह, प्रकाशन संस्थान 2005 ISBN 9788176241871
4 रीतिकाव्य की परंपरा, डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, साहित्य अकादमी, 1995 ISBN 9788126012798
5 भारतीय काव्यशास्त्र, डॉ. रमेश चंद्र शुक्ल, भारतीय ज्ञानपीठ 1993, ISBN 9788126300734
6 रसिकप्रिया केशवदास, भारतभवन प्रकाशन, 1600 (प्रारंभिक संस्करण)
7 हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, 1976, ISBN 978–8126700489
8 हिंदी काव्यशास्त्र, डॉ. नामवर सिंह, राजकमल, 1985, ISBN 978–8126710389
9 काव्य में उदात्त तत्व, डॉ. प्रभाकर मिश्र, साहित्य भवन, 2003 ISBN 978–8170271197
10 रस सिद्धांत, डॉ. नगेन्द्र, प्रकाशन विभाग 1988– ISBN 978–8126701356